रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 1 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 18 मार्च, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 1, 15-18 मार्च 2018 तदनुसार 5 चैत्र सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सोमवालो! हिंसा मत करो

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

मा स्त्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे।।

-ऋ. ७।३२।९

शब्दार्थ–हे **सोमिनः** = सोमवालो! **मा** = मत **स्त्रेधत** = हिंसा करो। **महे** = महत्त्व के लिए **दक्षत** = उत्साहित होओ। **आतुजे** = सर्वविध बल तथा **राये** = धन के लिए **कृणुध्वम्** = उद्योग करो, क्योंकि **तरणिः** = विपत्तियों को पार करने वाला रक्षक ही **जयति** = जीतता है और **क्षेति** = वास करता एवं **पुष्यति** = पुष्ट होता है। **देवासः** = विद्वान् लोग अथवा प्राकृत शक्तियाँ **कवत्नवे** = कुत्सित आचार-व्यवहार के लिए **न** = नहीं होते।

व्याख्या–यद्यपि वेद में राजा के कर्त्तव्यों में अन्यायी, आततायी, अत्याचारी मनुष्यों को मृत्युदण्ड देने तक का विधान है, तथापि अहिंसा वेद का एक प्रधान विषय है। **'मा स्त्रेधत'** [= हिंसा मत करो] यह वेद का स्पष्ट आदेश है। उत्तरार्ध में इसका हेतु दिया है–**'तरणिरिज्जयति'** = रक्षक ही जीतता है। मनुष्य विजय पाने के लिए हिंसा करता है, मारकाट करता है किन्तु उससे उसे अक्षय विजय आज तक नहीं मिला। इतिहास में उन महापुरुषों के नाम आदर-सत्कार से स्मरण किये जाते हैं, जिन्होंने प्राणियों की रक्षा की, रक्षा का उपदेश किया। उनके नाम लोगों की जिह्वा और हृदय में रहते हैं। मारकाट करने वालों के नाम इतिहास के पन्नों में भले ही अङ्कित हों, किन्तु लोगों के दिल की दीवाल पर उन्हें कोई न लिख सका। संसार कसाई का आदर नहीं करता वरन् उस भक्त का आदर करता है जो प्रातः घर से निकलकर मूक प्राणियों को अन्न देने जाता है। हिंसा से महत्त्व नहीं मिलता। तुम **'दक्षता महे'** महत्त्व के लिए उत्साह करो। तुम अपने उत्साह को मारकाट में व्यय न करो, वरन् इस उत्साह के द्वारा महत्त्व प्राप्त करो। सामान्य संसार शरीर को ही सब-कुछ समझता है। शरीर के सुख देने वाले उपकरणों में धन प्रधान है, अतः **'कृणुध्वं राय आतुजे'**–धन और सर्वविध बल की प्राप्ति के लिए उद्योग करो। **'उद्यमेनैव सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः'** उद्योग से ही कार्य सिद्ध होते हैं न कि केवल मनोरथों से। आज तक मनोरथ-लड्डुओं से किसी का पेट भरना तो दूर रहा जीभ भी मीठी नहीं हुई, अतः उद्योग करो। उद्योग का फल धन और बल होना चाहिए, उसका परिणाम महत्त्व होना चाहिए। वह लोकरक्षा से प्राप्त होगा, अर्थात् अपने धन तन को जनरञ्जन में लगा दो। **'तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा'** [ऋ० ७।३२।२०] = रक्षक ही विशाल बुद्धियोग के कारण ज्ञान और बल का दान करना चाहता है। उसे ज्ञात है कि दान से इसका नाश नहीं होता, अतः तरणि जहाँ विजय प्राप्त करता है, वहाँ साथ ही **'क्षेति पुष्यति'** = रहता और फूलता-फलता भी है। विजय के साथ समृद्धि, फूलना-फलना तो आनुषङ्गिक हैं। हिंसा को निन्दित मानकर वेद कहता है **'न देवासः कवत्नवे'** = देव कुत्सित आचार-व्यवहार के लिए नहीं, अर्थात् हिंसादि कुकर्म करने वाले को दैवीसम्पत्ति नहीं मिल सकती।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

नवसम्वत- नव वर्ष के शुभ अवसर पर

हार्दिक बधाई

नववर्ष-नवसम्वतसर 2075 चैत्र शुक्ला प्रथमा दिनांक 18 मार्च 2018 से आरम्भ हो रहा है। सृष्टि सम्वत् 1960853119 के शुभ अवसर पर तथा विक्रमी सम्वत् 2075 के शुभारम्भ पर हम आर्य मर्यादा के सभी पाठकों, आर्य समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रिंसीपलों, अध्यापकों, प्राध्यापकों तथा सभी आर्य बन्धुओं व आर्य बहनों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से, आर्य विद्या परिषद पंजाब की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं भेंट करते हैं व हार्दिक बधाई देते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

सुदर्शन कुमार शर्मा
प्रधान

प्रेम भारद्वाज
महामंत्री

सुधीर कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष

अशोक परूथी एडवोकेट
रजिस्ट्रार

समस्त अधिकारी व अन्तरंग सदस्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन,
चौक किशनपुरा जालन्धर

आर्य शब्द पर वाद विवाद क्यों ?

-पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम।
अपघ्नन्तो अराव्णः।। ऋग्वेद

ऋग्वेद में ईश्वर ऋषियों द्वारा आदेश देते है कि सम्पूर्ण मानव जाति को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ। पहले स्वयं आर्य बनो, तभी संसार को आर्य बना सकते हो।

आर्य समाज के संस्थापक युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अठाहरवीं शताब्दी में पुनः वेदों की ओर लौटाया, उन्होंने कहा कि सृष्टि प्रारम्भ से महाभारत काल तक सम्पूर्ण मानव समाज एक निराकार ईश्वर की पूजा करता था और वैदिक धर्म के संस्कार संस्कृति व सभ्यता को अपनाता था।

महाभारत काल के बाद आर्य धर्म, आर्य संस्कृति, व आर्य सभ्यता, अवैदिक मार्ग पर भारतवासियों के चलने से आर्य शब्द अपवाद बनता गया। महर्षि दयानन्द जी ने एक सत्य समाज में रखा, उन्होंने महाभारत काल के बाद विदेशियों के गुलाम व सामन्तशाहियों की शोषण वृति व अवैदिक मार्ग को भारत का काल इतिहास बताया था। उन्होंने अनादि काल से महाभारत काल तक का इतिहास समाज के सामने रखा, और अन्धकार युग से प्रकाशयुग की तरफ मानव समाज को लौटाया। आइये कुछ विचार करते है।

सृष्टि प्रारम्भ से महाभारत काल तक आर्यों का सांकेतिक इतिहास

सृष्टि प्रारम्भ में वेद रचित ऋषियों के पश्चात् सबसे पहले आर्य राजा श्रीमान मनु जी हुए। मनु के सात पुत्र थे, जिनकी एक शाखा में आर्य भगीरथ, अंशुमान, दलीप और रघु आदि हुए, और दूसरी शाखा में सत्यवादी आर्य हरीशचन्द्र आदि हुए थे। वैवस्वतः आर्य राजा मनु के पश्चात् तत्कालीन आर्य सूर्यवंश की 39 पीढ़िया बीत जाने के बाद आर्य मर्यादा पुरुष श्री राम आयोध्या में जन्म लेते है। मर्यादा पुरूषोत्तम आर्य श्रीराम के काल में तीन संस्कृति, का आगमन स्पष्ट देखा जा सकता है, एक आर्य संस्कृति द्वितीय वानर संस्कृति, तृतीय राक्षस संस्कृति का आगमन शुरू हो गया था। प्रारम्भ में केवल एक ही वंश था, बाद में कालचक्र से विभिन्न संस्कृति फैलती गयी। विशेष बात यह है कि तीनों ही वैदिक संस्कृति को मानते थे। तीनों में ही वेदों के अध्ययन की परम्परा थी। 39 पीढ़ियों तक एक ही वंश का संसार में राज्य था।

श्रीराम के युग में स्पष्ट देखने में आता है कि तीन विचार धाराओं ने जन्म ले लिया था और तीनों संस्कृति के तीन केन्द्र बन गये थे। आर्य संस्कृति का केन्द्र अयोध्या था, वानर संस्कृति का केन्द्र किष्कधा था, और राक्षस संस्कृति का केन्द्र श्रीलंका में था। वानरों की पूंछ होने की कल्पना हैं जबकि वानर अयोध्या वासियों की तरह वैदिक संस्कारों पर चलते थे। वानर शब्द का अर्थ पूंछ वाले वानर नहीं है अपितु वनों में रहने के कारण वानर नाम पड़ा था। वैसे राक्षस भी मनुष्यों की तरह थे। आर्य समाज, तपस्या और वैदिक विद्या के अनुसार वर्णो और आश्रमों की मर्यादा का पालन करते थे और राक्षस लोग तो निश्चत रूप से खावो, पियो मौज उड़ावो, भोग आदि व स्वेच्छाचारी, संस्कृति व संस्कारों के प्रतीक थे। वानर संस्कृति दोनों के बीच की रही थी, किन्तु वानर संस्कृति का रूझान आर्य संस्कृति की तरफ था और आर्य संस्कृति की उपेक्षा के कारण शन्नै शन्नै अनैतिकता की खाई में गिरते गये, और आर्य नैतिकता के उच्च आदर्शों तक नहीं पहुंच गये। आर्य संस्कृति व वानर संस्कृति यज्ञ प्रधान थी और राक्षस संस्कृति हिन्सा परायण थी। किन्तु तीनों समुदाय वेदों को ही धर्म मानते थे, और वैदिक संस्कारों पर चलते थे।

आर्यवर्त (भारत) में अन्धेर युग का प्रारम्भ

आर्य मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के पश्चात् तीनों संस्कृति में केवल दो विचार धारायें आर्यवर्त में चलने लगी थी, आर्य और अनार्य, अर्थात् देवता और राक्षस समुदाय का आपस में सघर्ष प्रारम्भ हुआ, और दोनों ही समुदाय अपने को बचाने के लिये आपस में युद्ध करने लगे। शन्नै शन्नै काल चक्र घूमता गया, और देव संस्कृति घटने लगी और राक्षस संस्कृति बढ़ने लगी। महाभारत काल के एक हजार वर्ष पूर्व से आर्य संस्कृति में गिरावट आने लगी और राक्षस विचार धाराएं पनपने लगी और महाभारत काल के पश्चात् से आज विश्व में राक्षस प्रवृति चरम सीमा पर पहुंच गयी हैं। आप स्वयं विचार कीजियेगा। आइए अब हम आर्य शब्द के अपवाद पर विचार करते है।

उत्तराखण्ड में आर्य शब्द पर जातिवाद का अपवाद

देवभूमि उत्तराखण्ड में जातिवाद चरम सीमा पर हैं। और आर्य शब्द को अनुसूचित जाति का समझा जा रहा है और जो भी नाम के आगे आर्य लगाता है, उसको छोटी जाति का समझा जा रहा है। क्योंकि देवभूमि उत्तराखण्ड पर भी राक्षस प्रवृति की विचार धाराएं होने के कारण। वेदों के ज्ञान के अभाव में, वैदिक संस्कारों के अभाव में, जातिवाद, छुआ-छूत, ऊंच-नीच चरम सीमा पर अग्रसर हो रखा हैं। पल स्वरूप स्वयं को ऊंची जाति बतलाने वाले अधिकांश अपने मूल को ही नहीं जानते है, और अपने नाम के आगे काल्पनिक जाति शब्द लगा कर, अपने को ऊंचा बताते है और आर्य शब्द व आर्य समाज संगठन को नीचा मानते है।

मैं उत्तराखण्ड की ऊंची जाति वालों से आग्रह करूंगा कि अपनी पन्द्रह बीस पीढ़ियों की उत्पत्ति का इतिहास तो जानिये। आप पायेंगे कि जाति के आगे उपजाति मनुष्यों द्वारा बनाया गया है। बस यही नाम के पीछे कथित जाति वाचक शब्द सब अहंकार व समाज को बांटने की प्रक्रिया है और अपने को ऊंचा मानना, दूसरे गरीब को नीचा मानना ही ईश्वर की दृष्टि में महापाप है।

धन्य हो महर्षि दयानन्द जी आपने सबको जगा दिया, आपने थोथी जातिवाद धर्मवाद,. समाज-वाद व राजनीतिवाद को सम्पूर्ण भारत में एक तरफ से नकार दिया था और आर्य समाज वैचारिक क्रान्ती का संगठन खोलकर सदैव के लिये, ज्ञान का प्रकाश पुंज जला दिया। आर्य शब्द जाति वाचक नहीं है अपितु श्रेष्ठ गुणवाचक हैं।

भारत के इतिहास में आर्य जाति बाहर से आई एक सफेद झूठ है

पराधीन भारत में अंग्रेजों ने सर्व प्रथम यह समझा आर्य संगठन, सच्चा ईश्वर भक्त व धार्मिक संगठन व समाजवादी है। इसका प्रभाव भारत पर कम करना चाहिए और आर्य समाजी बदल गये तो हमारी पश्चिमी संस्कृति भारत में फल फूल सकी है। इसलिये लार्ड मैकाले ने शिक्षा के कोषों में यह गलत लिखवा दिया कि आर्य बाहर से आये थे और भारत पर काबिज हो गये। यह सफेद झूठ था और भारत आजादी के बाद भी उस इतिहास के पन्नों को नहीं मिटा सका है।

आर्य अनार्य की परिभाषा

जो सच्चा ईश्वर अर्थात्, निराकार, सर्वशक्तिमान, सच्चिदानन्द स्वरूप ईश्वर को मानने वाला हो जो ईश्वरीय वाणी वेदों को मानने वाला हो, जो पंच महायज्ञ का अनुगामी हो जो सदैव सत्य की रक्षा करने में तत्पर रहता है, जो प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक अन्धविश्वासों को नहीं मानता हो जो सदैव दूसरों के कष्टों को दूर करने में अग्रणी रहता हो जो पूर्वजों के सत्य मार्ग पर जीवन बिताता हो, वह आर्य है और जो उक्त सभी तथ्यों को नहीं मानता हो वह अनार्य है। यही सन्देश वेदों में, आर्य ग्रन्थों में दिया गया है।

मानव समाज की सुखशान्ति का मार्ग केवल वैदिक मान्यताओं पर ही चलना है।

यह एक सच्चाई है, कि छः हजार वर्षों से हमने वैदिक धर्म की उपेक्षा करके, अपने अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिये, अनेक मत मतान्तरों को बना कर अनैतिक चरम सीमा पार कर दी हैं और संसार में अशान्ति, शत्रुता, अन्धविश्वास फैलाने में हम भारतीयों ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। समाज में अशान्ति का कारण व शीत युद्ध का शन्नै शन्नै आगमन का कारण ही भविष्य में मानव सृष्टि के विनाश का कारण बनेगा। यदि हम अपने को ईश्वर भक्त कहते है तो हमें ईश्वरीय नियम, सृष्टि क्रमानुसार, वैज्ञानिक आधार पर धार्मिक, सामाजिक व स्वच्छ राजनीति को अपनाना ही होगा और भारत में नाम के पीछे जातिवाचक शब्द को हटाना होगा और प्रत्येक धार्मिक संगठन, विशेष करने आर्य समाज को इस जातिवाद के भयंकर कैंसर से मुक्ति अपने नाम के आगे उपजाति शब्द हटा कर एक नई पहल शुरू कर सकता है। आर्य संगठन को अब करवट लेनी ही पड़ेगी, क्योंकि समाज में तमाम बुराइयों को समाप्त करने में आर्यों को आगे आना ही होगा तथा अन्य समाज सुधार संगठन भी आगे आयें।

सम्पादकीय

आर्य समाज के उद्देश्य एवं मन्तव्य
आर्य समाज स्थापना दिवस पर चिन्तन करें

18 मार्च 2018 को विक्रमी नव संवत् का शुभारम्भ हो रहा है। भारतीय संस्कृति के अनुसार यह हमारा नव वर्ष है। चैत्र सुदि प्रतिपदा से हमारा नया साल प्रारम्भ होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना करके राष्ट्र को एक नई दिशा देने का प्रयास किया था। महर्षि दयानन्द का उद्देश्य सम्पूर्ण संसार का उपकार करना था। वे संसार को मत, मजहब और सम्प्रदायों के जाल से मुक्त करना चाहते थे। उनका मानना था कि सब मनुष्यों को एक ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। इन सब उद्देश्यों की पूर्ति के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि वे 18 मार्च को अपनी-अपनी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाएं।

आर्य समाज सब मनुष्यों एवं सब देशों के प्रति न्याय और स्त्री पुरूषों की समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करता है। यह जन्मना जात-पात का खण्ड़न करता है और गुण, कर्म व योग्यता के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानता है। इस विभाजन से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं होता। आर्य कोई जाति नहीं है। आर्य श्रेष्ठ विचारों वाले व्यक्ति को कहते हैं। आज भी अगर वही वर्ण व्यवस्था लागू हो जाए तो राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

स्वामी दयानन्द भारत को राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से एकसूत्र में बांधना चाहते थे। एक राष्ट्र का रूप देने के लिए उन्होंने भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराना चाहा। सामाजिक दृष्टि से देशवासियों को एक करने के लिए उन्होंने प्रचलित मतों के स्थान में वेद द्वारा प्रतिपादित धर्म को स्थान देने की कामना की थी। स्वामी दयानन्द को इन दोनों उद्देश्यों में सफलता मिली। समाज सुधार के क्षेत्र में आर्य समाज ने अद्भुत सेवा की। स्त्रियों की दुर्दशा के निवारण के लिए महर्षि दयानन्द ने बड़ी उदारता और वीरता के साथ कार्य किया।

आर्य समाज ने अपने स्थापना काल से ही सबसे अधिक कार्य शिक्षा के क्षेत्र में किया है। इस समय भारत में सरकार के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में दूसरा स्थान आर्य समाज एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का है। आर्य समाज ने न केवल स्कूल, कॉलेज ही खोले, अपितु गुरूकुलों की स्थापना कर प्राचीन शिक्षा पद्धति को भी नवजीवन प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने एकांगी कार्य नहीं किया। आर्य समाज ने नारी शिक्षा की ओर भी न केवल ध्यान ही दिया अपितु उसे प्राथमिकता प्रदान की। इसी के परिणामस्वरूप आज शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की अग्रणी भूमिका है।

आर्य समाज की स्थापना करने के पश्चात महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के जो दस नियम बनाए, उनमें उन्होंने अपना लक्ष्य निर्धारित करते हुए छठे नियम में लिखा कि- संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। वेद में कहा गया है कि संसार को उन्नत करो। यह नियम ऐसा अद्भुत और अनोखा है जो संसार के किसी संगठन में नहीं पाया जाता। प्रत्येक समाज अपने समान विचार वाले लोगों को प्रमुखता प्रदान करता है। जैसे मुसलमान और ईसाई अपने-अपने सम्प्रदाय की स्थापना करके उसका विस्तार करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इसके विपरीत वैदिक धर्म संसार के लिए है। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज किसी एक देश या जाति विशेष से सम्बन्धित नहीं हैं । एक आर्य के लिए आर्य समाज के सदस्य ही नहीं अपितु संसार के दूसरे व्यक्ति, व्यक्ति ही नहीं सम्पूर्ण प्राणीमात्र सहानुभूति, दया और प्रेम के पात्र हैं।

आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जहां पर किसी के साथ कोई भेदभाव न हो। जाति, मत, पन्थ और सम्प्रदाय की तरह कोई व्यवहार न करे। सभी समान विचार वाले होकर सबके कल्याण के लिए मिलकर कार्य करें। समान विचार वाले होकर राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करें। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने द्वारा स्थापित समाज को आर्य समाज का नाम दिया। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ होता है अर्थात् जिनके विचार शुद्ध, आचार शुद्ध, व्यवहार और खान-पान शुद्ध होता है वही व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है।

आर्य समाज के सिद्धान्त और नियम सार्वभौम हैं। आर्य समाज के नियम वेदों पर आधारित हैं। इन नियमों में किसी एक की उन्नति नहीं परन्तु सबकी उन्नति की कामना की जाती है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के नौवें नियम में लिखा कि-प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का उद्देश्य सारे संसार का कल्याण करना था । वे किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं अपितु सर्वे भवन्तु सुखिन: की भावना को लेकर कार्य करते थे। यही कारण है कि आर्य समाज ने सभी क्षेत्रों में कार्य किया। आर्य समाज किसी के दबाव में नहीं आया और गलत का खुलकर विरोध किया। इसी कारण से आर्य समाज एक समाज सुधारक के रूप में सामने आया।

आर्य समाज श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज है। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ, धर्मपरायण, सदाचारी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ। आर्य शब्द किसी नस्ल या जाति का बोधक नहीं है और न ही किसी देश विशेष के व्यक्तियों के लिए ही इसका प्रयोग होता है। जिस व्यक्ति के अन्दर अच्छे गुण हैं, अच्छे संस्कार हैं, अच्छे विचार है वही मनुष्य आर्य कहलाने का अधिकारी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज नामक संस्था किसी मत-पन्थ और सम्प्रदाय पर आधारित नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर इस समाज की स्थापना नहीं की थी। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य विश्व भर को आर्य बनाना, सम्पूर्ण मानव जाति का उपकार करना अर्थात् लोगों की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। आर्य समाज की स्थापना के पीछे उनका लक्ष्य समाज में फैली बुराईयों और कुरीतियों को दूर करना था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जब अपने गुरू स्वामी विरजानन्द जी से शिक्षा ग्रहण करने के बाद कार्यक्षेत्र में उतरे तो समाज में अनेक प्रकार के पाखण्ड़ और अन्धविश्वास फैले हुए थे। स्त्री जाति की स्थिति दयनीय थी। नारियों को पैर की जुती समझकर चारदीवारी में कैद करके रखा जाता था। बाल विवाह की प्रथा होने के कारण दूध पीते बच्चों का विवाह करवा दिया जाता था। मूर्ति पूजा के कारण हमारे देश में अनेक प्रकार के पाखण्ड़ और अन्धविश्वास फैले हुए थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पूर्ण पुरूषार्थ के साथ इन बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया। इसलिए हम सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर संकल्प लेकर महर्षि के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए जुट जाएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

ईश्वर पर विश्वास

ले०-अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम स्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

प्लेसनटन यू. एस. ए. आने से पूर्व, परिवार के अतिरिक्त जिन महानुभावों की शुभकामनाएं व आशीर्वाद लिया था। उनमें स्वनामधन्य श्री धर्मवीर बत्तरा, प्रधानः आर्य समाज सैक्टर 9 पंचकूला, हरियाणा भी थे। केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ़, मोहाली और पंचकुला की अत्यन्त समृद्धशाली, अनेक प्रकल्पों का सफलतापूर्वक संचालन करने वाली यह प्राणवान आर्य समाज है।

यह आर्य समाज प्रतिवर्ष नवम्बर मास में, वार्षिकोत्सव पर अत्यत्तुम स्मारिका निकालती है। आदरणीय बत्तरा जी के चलते गत तीन वर्षों से मेरे लेख इस स्मारिका का अंग बन चुके हैं। बत्तरा जी ने स्मारिका परिवार का अंग मानकर मुझे सम्मानित किया है। जैसे ही मैंने बताया कि मैं एक दिसम्बर 2017 को भारत लौटूंगा तो बत्तरा जी ने कहा स्मारिका के लिये लेख का क्या होगा। मैने कहा-मिल जावेगा। तत्काल वाट्स एप पर मेल आईडी का आदान-प्रदान हो गया। इतनी भूमिका इसलिये आवश्यक समझी कि ऐसे ही स्नेहसिक्त महानुभाव, लेखक को जीवनदायिनी शान्ति देते हैं। अस्तु! 2016 की स्मारिका में 'दो मंत्र युवाओं के लिये' प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् 5-7 पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ। अब यह ऋषि-समर्पण में संकलित है। इसी क्रम में यह लेख है। युवाओं के लिये यह लेख है। भटकन के शिकार-तिरूपति बाला जी-वैष्णों देवी, सोमनाथ, वैद्यनाथधाम के चक्कर लगाने के पश्चात् भी अतृप्त असंतुष्ट, बेचैन, जन ख्वाजा मुईन उद्दीन चिस्ती-अजमेर तक पहुंच जाते है। ऐसे लोग भी इस लेख से लाभान्वित होना चाहें तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है?

'दो मंत्र युवाओं के लिये' लेख का सारसंक्षेप यही है कि दुर्गुण, दुर्व्यसन से छूटने की प्रार्थना उस प्रभु से कीजिए जो भूः भुवः और स्वः है; वही वरण करने योग्य है। सच्चा मित्र है। मुझे नहीं मालूम कि मेरा लेख कितने युवक/युवतियों को स्पर्श कर सका। अभी भी असंख्य ऐसे हैं जो उसी मौज-मस्ती में आकण्ठ डूबे हुए हैं। उन्हें सतत जगाने की आवश्यकता है इसीलिये दिनांक 23/8/17 को फेसबुक पर एक पोस्ट डाली थी चूंकि वह इस संदर्भ में उपयुक्त है इसलिये उसे अविकल दे रहा हूं। नकारात्मक भाषा-शैली में व्यंग के रूप में लिखी होने पर भी सकारात्मक प्रभाव डालेगी, इसी आशय से यह लिखी गई थी। पोस्ट इस प्रकार है-

आधुनिकी चरसी, सामिषी युवक-युवतियां जो पूरी-पूरी रात आमोद-प्रमोद में विताकर अल-सुबह घर लौटती हैं, उनसे गुज़ारिश है कि वे दयानन्द का नाम न लें न सुनें। आर्य समाज में झांकें भी नहीं क्योंकि उन्हें 'कम्पनी' नहीं मिलेगी। सुबह नहा-धोकर आर्य समाज जाना पड़ेगा। हवन सामग्री, अगर बत्ती की अपरिचित, अप्रिय गंध नासापुरों में जाकर मिजाज बिगाड़ देगी। ब्रह्मचर्य पालन, रक्षण पर, सद विचारों पर रूखे-सूखे, घिसियापिटी भाषण सुनने पड़ेगें। हो गया न कबाड़ा। आपके दो दिवंगत साथियों की बात बताता हूं।

नानकचन्द कोतवाल बरेली का बेटा मुंशीराम दयानन्द के चक्कर में पड़ गया। सब कुछ बरबाद हो गया। दारू छूट गई। मांसाहार छूट गया। दोस्तों के साथ शाम गुजारना भी छूट गया। संन्यासी बन गया। दिल्ली में बीमार पड़ा था, अब्दुल रशीद ने तीन गोली में ढेर कर दिया।

दूसरा मेहता अमीचन्द तहसीलदार था। सामिष भोजन, दारू का शौकीन, रातें कोठे पर गुजारने वाले को दयानन्द की सभा में जाकर गाना गाने की क्या जरूरत पड़ी थी? मीठा गला था, मीठा भजन था। ऋषि ने गाने की अनुमति दे दीं। अच्छा लगा तो कह दिया रोज भजन गाया करो। दुश्मनों ने चुगली कर दी। जब वह आया, ऋषि ने कह दिया-अमीचन्द हो तो हीरा, पर कीचड़ में पड़े हो। शराबी, कवाबी आर्य समाज का भजनोपदेशक हो गया। इनसे कुछ नसीहत लो भाई।'

मस्तिष्क की हार्ड डिस्क पर स्थायी रूप से प्रभाव डालनी वाली यह पोस्ट है। यदि इसकी भावना के अनुकूल जीवन व्यतीत करने का सुन्दर अवसर खो दिया तो, जीवन के संध्याकाल में, केवल पश्चाताप ही हाथ आवेगा। भगवान् दयानन्द का संसर्ग कीजिए उनके ग्रंथों का, विशेषकर सत्यार्थ-प्रकाश के प्रथम और सप्तम समुल्लास (अध्याय) का अथवा आर्य समाज जाइए। दुर्गुणो-दुव्यर्सनों के निस्तार का मार्ग खुल जावेगा। यह जीवन भी सुख-शांति से व्यतीत होगा और आगामी जीवन के लिये पाप-कर्मों का बोझ कुछ कम न होगा। आर्य समाज जाकर ढ़ाई-तीन घन्टे व्यतीत करना चाहें, तो दोनों समय संध्योपासना कीजिए, स्तुति, प्रार्थना और उपासना के मंत्रों का अर्थ सहित जाप कीजिए। यदि इतना भी समय न दे सकें तो केवल परमात्मा के निज नाम ओ३म का अर्थ सहित स्मरण कीजिए। उसका भी उतना ही प्रभाव होगा जितना समस्त संध्योपासना, स्तुति-प्रार्थना और उपासना मत्रों का, यज्ञ का। ओ३म् की जितनी व्याख्याएं मिलें संग्रह कर लीजिए। कायापलट के लिये इतना काम ही पर्याप्त है। ईश्वर से आपको सन्मति देने की प्रार्थना करता हूं। सलंग्न ओ३म् भजन फिलहाल आपके लिये पर्याप्त रहेगा।

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्त्ता, विद्याता, ओ३म् पालनहार है।।
ओ३म् है दुःख का विनाशक, ओ३म् सेवानन्द है।
ओ३म् है बल, तेज धारी, ओ३म् करुणाकन्द है।।
ओ३म् सबका पूज्य है, हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओ३म् के गुरुमंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन
ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् के जाप से, हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा
एक दिन यह ध्यान हमको मुक्ति तक पहुंचाएगा

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार की गतिविधियां

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार, दाल बाजार लुधियाना निरन्तर आर्य समाज के प्रचार प्रसार के कार्यों में रत्त है। स्त्री आर्य समाज के द्वारा अपने साप्ताहिक सत्संग में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस व ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि का पर्व भी मनाया गया। आर्य समाज के सभी महापुरूषों के जन्मदिवस एवं बलिदान दिवस पर उनके द्वारा आर्य समाज के लिए किए गए कार्यों का गुणगान किया जाता है। स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार आर्य समाज के प्रत्येक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्मस्थली टंकारा, गुरूकुलों एवं आर्य समाज की कोई भी संस्था हो, सभी बहनें उसमें भाग लेती हैं और सहयोग भी प्रदान करती हैं। स्त्री आर्य समाज के द्वारा जरूरतमन्द लोगों की यथाशक्ति सहायता प्रदान की जाती है। स्त्री आर्य समाज के साथ-साथ पुरूष समाज के भाईयों को भी हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया जाता है और सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया जाता है। सब बहनों का एक दूसरे को भरपूर सहयोग मिलता है। महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे ले जाने के लिए स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार निरन्तर सक्रिय है।

-जनक रानी आर्या मंत्री स्त्री आर्य समाज

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर में गायत्री महायज्ञ का आयोजन दिनांक 18 मार्च 2018 रविवार विक्रमी नव संवत्सर से 26 मार्च 2018 सोमवार तक बड़े उत्साहपूर्वक किया जा रहा है। माघ मास की भांति इसमें भी गायत्री मन्त्र की पावन ऋचाओं के द्वारा विश्व कल्याणार्थ यज्ञ में आहुतियां प्रदान की जाएंगी। प्रतिदिन दोपहर 3:30 से 5:00 बजे तक यज्ञ, भजन व श्री सुरेश शास्त्री जी के प्रवचन होंगे। आप सभी बहनों, भाईयों से निवेदन है कि जिस प्रकार माघ मास में आपका भरपूर सहयोग मिलता है उसी प्रकार इन नौ दिनों में भी अपना सहयोग प्रदान करें तथा परिवार सहित इस महायज्ञ में भाग लें व पुण्य प्राप्त करें।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन

यज्ञ–महिमा

पं०-वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

'यज्ञ' शब्द यज् धातु से सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है-देवपूजा, संगतिकरण और दान। संसार के सभी श्रेष्ठकर्म यज्ञ कहे जाते हैं। यज्ञ को अग्निहोत्र, देवयज्ञ, होम, हवन, अध्वर भी कहते हैं।

यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं-

''सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दु:ख, और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य, और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

जहां होम होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म हो के, फैल के, वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर, औषधियां शुद्ध होती हैं। शुद्ध वायु का श्वास स्पर्श, खानपान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ता है। इसको 'देवयज्ञ' भी कहते हैं क्योंकि यह वायु आदि पदार्थों को दिव्य कर देता है।''

परोपकार की सर्वोत्तम विधि हमें यज्ञ से सीखनी चाहिए। जो हवन सामग्री की आहुति दी जाती है, उसकी सुगन्धि वायु द्वारा अनेक प्राणियों तक पहुंचती है। वे उसकी सुगन्ध से आनन्द अनुभव करते हैं। यज्ञकर्ता भी अपने सत्कर्म से सुख अनुभव करता है। सुगन्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति याज्ञिक को नहीं जानते और न ही याज्ञिक उन्हें जानता है। फिर भी परोपकार हो रहा है, वह भी निष्काम।

यज्ञ में चार प्रकार के हव्य पदार्थ डाले जाते हैं-

1. सुगन्धित-केशर, अगर, तगर, गुग्गल, कर्पूर, चन्दन, इलायची, लौंग, जायफल, जावित्री आदि।

2. पुष्टिकारक-घृत, दूध, फल, कन्द, मखाने, अन्न, चावल, जौ, गेहूँ, उड़द आदि।

3. मिष्ट-शक्कर, शहद, छुहारा, किसमिस, दाख आदि।

4. रोगनाशक-गिलोय, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, मुलहठी, सोंफ, तुलसी आदि औषधियां अर्थात् जड़ीबूटियां जो हवन-सामग्री में डाली जाती हैं।

यज्ञ से रोगाणुओं अर्थात् कृमियों का नाश हो जाता है। ये रोगजनक कृमि पर्वतों, वनों, औषधियों, पशुओं और जलों में रहते हैं, जो हमारे शरीर में अन्न और जल के साथ जाते हैं।

मलमूत्र के विसर्जन, पदार्थों के गलने-सड़ने, श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया, धूम्रपान, कल कारखानों-वाहनों-भट्टों से निकलने वाला धुआं, संयन्त्रों के प्रदूषित जल, रसायन तत्त्व एवं अपशिष्ट पदार्थों आदि से फैलने वाले प्रदूषण के लिए मानव स्वयं ही उत्तरदायी है। अत: उसका निवारण करना भी उसी का कर्त्तव्य है।

वस्तुत: पर्यावरण को शुद्ध बनाने का एक मात्र उपाय यज्ञ है। यज्ञ प्रकृति के निकट रहने का साधन है। रोगनाशक औषधियों से यज्ञ द्वारा रोगनिवारण वातावरण को प्रदूषण से मुक्त करके स्वस्थ रहने में सहायक होता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने भी परीक्षण करके यज्ञ द्वारा वायु की शुद्धि होकर रोगनिवारण की इस वैदिक मान्यता को स्वीकार किया है।

प्राय: लोगों का विचार है कि यज्ञ में डाले गए घृत आदि पदार्थ व्यर्थ ही चले जाते हैं। परन्तु उनका यह विचार ठीक नहीं है। विज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता अपितु उसका रूप बदलता है। यथा-बर्फ पिघल कर जल रूप में बदलना, जल का वाष्प रूप में बदल कर उड़ जाना। रूप बदलने का अर्थ नष्ट होना नहीं, बल्कि अवस्था परिवर्तन है। बस, यही सिद्धान्त यज्ञ पर भी चरितार्थ होता है। यज्ञ में डाले गए पदार्थ सूक्ष्म होकर आकाश में पहुँच जाते हैं। यज्ञ में पौष्टिक, सुगन्धित और रोगनाशक औषधियों की हवन सामग्री से दी गई आहुतियों से पर्यावरण की शुद्धि होती है। सभी पदार्थ सूक्ष्म होकर पृथिवी, आकाश, अन्तरिक्ष में जाकर अपना प्रभाव दिखाते हैं। इससे मनुष्य, अन्य जीव-जन्तु एवं वनस्पतियां सभी प्रभावित होते हैं।

यज्ञ से शुद्ध हुई जलवायु से उत्पन्न औषधि, अन्न और वन-स्पतियां आदि भी शुद्ध एवं निर्दोष होते हैं।

वायु, जल आदि जो देव हैं, वे यज्ञ से शुद्ध हो जाते हैं, आकाश मण्डल निर्मल और प्रदूषणमुक्त हो जाता है। यही उन देवताओं का सत्कार है, यही उनकी पूजा है।

अग्नि में समर्पित पदार्थ आकाश मण्डल में पहुँचकर मेघ बनकर वर्षा में सहायक होते हैं। वर्षा से अन्न और अन्न से प्रजा की तुष्टि-पुष्टि होती है। इस प्रकार जो अग्निहोत्र करता है, वह मानो प्रजा का पालन करता है।

परमात्मा ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है परन्तु क्या मनुष्य ने भी परमात्मा को यज्ञ के द्वारा कुछ दिया है? परमात्मा स्वयं वेद में कहता है-

देहि में ददामि ते।।

तुम मुझे दो, मैं तुम्हें देता हूँ।

अत: यज्ञ करते हुए बड़े प्रेम से वेदमन्त्र बोलकर आहुति दो जिससे मन शुद्ध, पवित्र और निर्मल बन जाए। प्रदूषण समाप्त हो जाय। जनता खुशहाल हो। विश्व का कल्याण हो।

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।।
करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्निदेव।
डालो शुद्ध पदार्थ यज्ञ में खाते हैं अग्निदेव।
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुंचाते हैं अग्निदेव।
बादल बना के भूमि पर बरसाते अग्निदेव।
बदले में एक के अनेक दे जाते अग्निदेव।
पैदा अनाज होता है भगवान् यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।।

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी की ओर से अन्न-वस्त्र सहयोग

''नर सेवा ही नारायण सेवा है'' इस कहावत को ध्यान में रखकर गुरुकुल हरिपुर, जुनानी समय-समय पर ओड़िशा एवं ओड़िशा से बाहर राज्यों में गरीबों, अनाथों, विधवाओं, विधुरों एवं दिव्यांग भाई-बहनों, माताओं एवं वृद्ध असहाय महानुभावों को अन्न व वस्त्र सहयोग के रूप में प्रदान करते रहता है। इसी क्रम में 4 फरवरी 2018 दिन रविवार को नुआपड़ा जिला के विभिन्न गांवों के 500 परिवार को 25-25 किलो चावल, एक-एक साड़ी एवं पतंजलि का एक-एक गुलाब शर्बत प्रदान किया गया। ध्यान रहे ऐसे असहाय व्यक्तियों को सहयोग किया गया जो वितरण केन्द्र तक बड़े मुश्किल से आये। वितरण केन्द्रों में पहले वैदिक यज्ञ, प्रवचन तदुपरान्त सहयोग लेने आये हुए जनों को सहयोग प्रदान किया गया। कार्यक्रम में आये हुए सभी महानुभावों के लिये भोजन का उचित प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया गया था।

यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के हितैषी श्री विजय कुमार लाहोटी, रायपुर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य की देख-रेख में गुरुकुल के आचार्य श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी, वकील संघ नुआपड़ा जिला के अध्यक्ष श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी, गुरुकुल के अनन्य सहयोगी श्री ताराकान्त प्रधान, श्री दिलीप कुमार साहु, श्री कार्तिक दीप आदि तथा स्थानीय महानुभावों के पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः।।
-ऋ० २.१२.९

भावार्थ-जिस प्रभु की कृपा के बिना मनुष्य कभी विजय को नहीं प्राप्त हो सकते। काम, क्रोधादि आभ्यन्तर शत्रुओं के साथ और बाहिर के शत्रुओं के साथ भी युद्ध करते हुए, अपनी रक्षा के लिए जिसकी प्रार्थना सब मनुष्य करते हैं। जो प्रभु आप अटल हुआ भी दूसरे सबों को गिरा देता है। हे मनुष्यो! वह सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ही इन्द्र है, ऐसा आप सब लोग जानो।

हम प्रातः उठ प्रभु स्मरण से अपने कार्य में लगें

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी

(गतांक से आगे)

हमारे कार्य का कोई भी क्षेत्र ऐसा न रहे कि जिस से हम अपरिचित हों। किसी विषय में पूर्णता पाने के लिए आज के युग में उस विषय की पीएच डी करनी होती है। जिसने यह योग्यता पा ली हम उसे डा. कहते हैं किन्तु वैदिक भाषा में उसे इंद्र कहा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि इंद्र एक नहीं होता अपितु विभिन्न विषयों के इंद्र भी विभिन्न ही होते हैं। इसलिए इंद्र किसी विषय के विशेषज्ञ को कहते हैं और यह विशेषज्ञ अनेक विषयों के लिए अनेक ही होते हैं। एक नहीं। इसलिए इंद्र अनेक होते हैं।

हमारे जीवन का लक्ष्य अपने विषय का इंद्र बनना होता है। अपने व्यवसाय का विशेषज्ञ बनना होता है। अपने कार्य में निपुणता पाना होता है। कहा भी है ''स्वकर्मणा तमभयचय् सिद्धिं विंदन्ती मानवः''। हमने अपने जिस क्षेत्र के अग्नि को आगे लाने का यत्न किया है। इंद्र भी उस क्षेत्र का ही आगे लाना होगा। अन्यथा सफलता नहीं मिलेगी। हम व्यापार कर रहे हैं तो व्यापार का ही इंद्र लाना होगा। हिन्दी पढ़ रहे हैं तो हिन्दी का ही इंद्र पुकारना होगा। इसके अतिरिक्त किसी अन्य इंद्र को स्मरण करने पर हम अपने क्षेत्र में सफल न हो पावेंगे।

हमारा लक्ष्य इंद्र बनना है। हम ब्राह्मण हैं तो ब्राह्मनेंद्र को पुकारेंगे, क्षत्रिय हैं तो क्षत्रियेन्द्र को पुकारेंगे, व्याकरण पर कार्य कर रहे हैं तो व्याकरण के इंद्र को पुकारेंगे। हम कुछ भी बनें किन्तु हमारा अन्तिम लक्ष्य है कि हम अपने विषय के इंद्र बनें तथा इसे पाने का यत्न निरंतर करते रहें।

३. मित्रः इंद्र तक पहुँचने के लिए हमें उस परम पिता के अनेक रूपों का स्मरण करना होता है। उसके अनेक रूपों में उसे स्मरण करना होता है। इन रूपों में जो अगला रूप आता है। उसे हम मित्र कहते हैं।

जिसे हम अपना मित्र मानते हैं। हम सदा उसकी उन्नति चाहते हैं। उसकी उन्नति के लिए समय-समय पर आवश्यक सलाह भी उसे देते हैं। एक अच्छा मित्र सदा अपने अच्छे मित्र द्वारा दिए गए सुझावों पर विचार करता है तथा उसे उत्तम मानते हुए, उस पर चलने का प्रयास भी करता है। ताकि उसका कार्य सरलता से सिद्ध हो सके। इंद्र बनने के लिए जिन दो रूपों की आवश्यकता होती है। उनमें से एक मित्र है तथा दूसरा वरुण होता है। हम इंद्र के रूप मित्र का स्मरण करें। उसे पुकारें तथा उससे मार्गदर्शन प्राप्त करें। हमें चाहे स्वाध्याय से, सत्संग से या फिर किसी अन्य उपाय से जो भी उचित सलाह मिलेगी हम उसे लेंगे। इसका नाम ही मित्र है।

४. वरुण : मित्र के साथ ही साथ एक अन्य सहयोगी की भी आवश्यकता होती है। इस सहयोगी को हम वरुण के नाम से जानते हैं। इंद्र बनने के लिए जहाँ मित्र का होना आवश्यक होता है। वहाँ वरुण का होना भी आवश्यक है। हम अपने कार्य की सिद्धि के लिए जब तक अपने स्वयं के लिए कठोर नहीं होते तब तक अपने कार्य में सफल नहीं होते। हम अपने कार्य में कठोरता का व्रत धारण कर जुट जावें। निश्चित समय पर उठ कर अपने कार्य में लग जावें, खूब पुरुषार्थ से कार्य करें। कहीं किसी प्रकार की कमी न रहने दें। यह ही हमारे अपने लिए कठोरता है या यही अपने लिए दंड है।

वरुण का कार्य है दंड देना, अपने नियमों में कठोरता लाने के लिए प्रेरित करना, अपने आप को अनुशासन में बाँध कर नहीं चलावेंगे तो हम जो मित्र की उपासना करते हैं, जो मित्र का स्मरण करते हैं। वह बेकार जावेगा। उपहास मात्र बनकर रह जावेगा। इस अवस्था में हमारा यह प्यारा मित्र हमारे सामने वरुण बन कर आ खड़ा होगा। हमारा वह मित्र रूप प्रभु तो सर्व व्यापक होने के कारण हमारी प्रत्येक गतिविधि पर नज़र रखे हुए है। हम उससे छुप नहीं सकते। इसलिए हमारे लिए एक मात्र यह ही कल्याण का मार्ग है कि हम स्वयं ही अपने मित्र बनें तथा स्वयं ही अपने वरुण भी बनें।

५. अश्विनी : अश्विनी देवता का स्मरण करते हुए हम अपने लिए अश्विनी बनें। अश्विनी जोड़े के रूप में होता है, इसलिए यह कभी अकेला नहीं रहता। इस जोड़े में से एक अपने आप को अपने आगे वाले से बांधे रखता है तथा उस से जुड़े होने के कारण उसके साथ निरंतर आगे को, उन्नति को प्राप्त करता है। दूसरा भी बड़ा ही सुंदर कार्य करता है। वह अपने आप को अपने से पीछे वाले से बांधे रखता है और जिस भी उन्नति के मार्ग पर स्वयं बढ़ता है। उस प्रगती पथ पर अपने अनुगामियों को भी ले आता है। इस प्रकार मानव केवल अपनी उन्नति से ही संतुष्ट नहीं होता अपितु सबकी उन्नति को भी अपनी उन्नति का एक आवश्यक अंग आवश्यक भाग मानने लगता है।

मंत्र कहता है कि हम अपने जीवन में अश्विनी बनें। अश्विनी बन कर हम उन लोगों से कुछ सीखें जो प्रगती के क्षेत्र में हमारे से आगे निकल गये हैं तथा उनको भी अपने साथ लेकर चलें जो हमारे से पीछे रह गए हैं। इस प्रकार हम एक संकल बनावें अथवा एक रेल गाड़ी के समान कार्य करे कि हम आगे के डिब्बे के साथ जुड़ कर उसके साथ आगे की और भागें तथा पीछे के डिब्बे के साथ भी बंध जावें और उसे भी अपने साथ भगाने का यत्न करें। इस प्रकार के कुंडे बनने के लिए ही हम अश्विनी को पुकारते हैं।

६. भग को पुकारें : हम प्रातः काल के समय में अपनी शांति बनाए रखें। यह शांति आती है। क्रोध न करने और सहनशील बनने से। यदि हम सहनशील नहीं हैं तो निश्चय ही हम व्यर्थ के विवाद में उलझ कर अपना समय नष्ट करने वाले बन जावेंगे तथा समय जो हम ने कुछ निर्माण के कार्यों पर लगाना था। कुछ पाने के लिए लगाना था। अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए लगाना था। वह समय हमने वाद विवाद में खो दिया। लड़ाई झगड़े में खो दिया। परिणाम स्वरूप हम विद्यार्थी हैं तो पढ़ाई में पिछड़ गये। व्यवसाय करने वाले हैं तो अपने व्यवसाय में पिछड़ गये।

प्रातः ही यदि झगड़ा हो जाता है तो पूरा दिन ही मन शांत नहीं होता। इसलिए मंत्र कहता है कि हम सहनशील बन कर किसी प्रकार के विवाद में न उलझें। विशेष रूप से प्रातः काल की शुभ बेला में तो बिल्कुल ही नहीं। यदि कोई ऐसी अवस्था आ भी जाती है तो इस अवसर पर सहन करने की शक्ति को बढ़ा कर अपने आप को विवाद से बचाने का यत्न करो। मंत्र भी इस निमित भग शब्द का प्रयोग कर कह रहा है। उपदेश कर रहा है कि हम सहनशील बनें। भग से भाव सहनशीलता से ही है।

७. हम पूषा को पुकारें:-प्रातः काल की इस अमृत वेला में हम पूषा को पुकारते हैं। पूषा का अर्थ है आज्ञा का पालन। अतः हम परमपिता परमात्मा की आज्ञा पालन में ही अपना कर्तव्य मानते हैं। मंत्र प्रभु की वाणी है। इस वाणी के अनुसार चलना ही उस पिता की आज्ञा का पालन मानना है। अतः हम वेदवाणी को प्रभु आदेश मानते हुए तदानुरुप ही कार्य करने की प्रतिज्ञा लेते हैं।

जब कोई व्यक्ति किसी की आज्ञा का पालन करने के स्थान पर अपने तर्क देने लगता है तो मानो वह आदेश देने वाले का अपमान कर रहा होता है। जिसका अपमान किया गया हो। वह कभी भी हमारा शुभचिंतक नहीं हो सकता। इसलिए पूषा शब्द के माध्यम से मंत्र उपदेश कार रहा है कि हम बड़ों की आज्ञा को प्रभु वचन मानते हुए स्वीकार करें और तदनुरूप आर्य करेंगे तो हम अपने कार्य में निश्चय ही सफलता प्राप्त करेंगे।

इस आज्ञा पालन को हम अपने शरीर के अंगों से ही परख कर देखें। हमारा शरीर हमारे सिर को शासक मानता है। हमारा सिर हमारे शरीर का शासक होने के कारण शरीर के विभिन्न अंगों को समय-समय पर कुछ आदेश देता रहता है। जिसे हमारा शरीर यथावत स्वीकार करते हुए कार्य करवाए हैं। यदि हमारे शरीर का कोई एक अंग भी कुछ समय मात्र के लिए इस आदेश को न माने तो हमारा शरीर बेकार हो जावेगा। जैसे सिर से आदेश आया कि हे हाथ तू अमुक काम कर। हाथ इस आदेश से मुख मोड़ ले तो वह काम कभी सपन्न ही नहीं हो सकता। इससे हमारे शरीर के नष्ट होने का भी भय हो सकता है जबकि काम फिर भी संपन्न नहीं होगा।

यदि हम आज्ञा पालन नहीं करेंगे तो जो विचार मित्र ने दिए हैं, जो विचार वरुण ने दिए हैं। वह मात्र विचार ही रह जाएंगे। स्वप्न ही रह जाएंगे। कभी पूर्ण नहीं होंगे। हाँ! यदि कहीं कुछ शंका हो तो मंत्र ने उसका भी उपाय दिया है।

८. ब्रह्मणस्पति को पुकारें :

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 6 का शेष-हम प्रातः उठ प्रभु...

अनेक बार ऐसा होता है कि प्राप्त आदेश पर कुछ शंका हो जाती है। इस अवस्था में मंत्र उपदेश कर रहा है कि हम ब्रह्मणस्पति को पुकारें, उसकी शरण में जाएँ और बड़े शांत रूप में अपनी शंका उसके सम्मुख रखें और उसका समाधान करने की प्रार्थना करें।

मंत्र के अनुसार ब्रह्मणस्पति का अभिप्राय: है परमात्मा। इसके साथ ही वह लोग जो परमात्मा में विचरण करते हैं। वह भी इस श्रेणी में आ जाते हैं। इस प्रकार परमात्मा अर्थात् वेद तथा जो लोग सदा वेद में विचरण करते रहते हैं। वेद के अर्थों को समझते और समझाते हैं। हम लोग ऐसे लोगों के पास जावें। उन्हें पुकारें तथा अपनी समस्या, अपना प्रश्न, अपनी शंका उनके सम्मुख रखें तथा वेद का स्वाध्याय कर उस का समाधान प्राप्त करें। इस प्रकार यह सब देव गण मिलकर हमारे अंदर अच्छे गुणों का उत्पादन करते हैं। अच्छाइयों को बढ़ाते हैं तथा हमारे विकारों का, हमारी बुराइयों का नाश करते हैं तथा हमारे अंदर शक्ति को बढ़ाते हैं।

९. सोम को पुकारते हैं : स्वाध्याय से हम अपनी सब समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के पश्चात हम समान अवस्था में आ जाते हैं। इसे ही सोम कहते हैं। शक्ति को भी सोम कहते हैं। अत: स्वाध्याय से हमें मानसिक शक्ति मिलती है। सम्भूति मिलती है और हम अब अपने कार्य को संपन्न करने के लिए सशक्त हो जाते हैं तथा तन्मयता से कार्य में लग जाते हैं।

१०. रुद्र को पुकारते हैं : अनेक मनुष्य ऐसे भी होते हैं कि यह सब मार्ग दर्शन मिलने पर भी कुछ विशेष नहीं कर पाते। उनके जीवन में पुरुषार्थ की भावना होती ही नहीं। ऐसे लोग या तो मंद बुद्धि होते हैं या फिर कामचोर होते हैं। ऐसे लोगों को तो दंड देने के अतिरिक्ति कोई अन्य मार्ग नहीं रह जाता। इसलिए मंत्र अपने अन्तिम भाग में कहता है कि ऐसे लोगों के लिए रुद्र को पुकारें। जो इन की दुर्भावना का विनाश करेगा।

इस मन्त्र के यह अंतिम मंत्रांश अर्थात् प्रात: सोममुत रुद्रं हुवेम के माध्यम से निराशा पर निशाना साधा गया है। इस में बताया गया है आनंद वर्षक उस प्रभु का हमें निरंतर चिंता न करना चाहिए। प्रभु के इस चिंतन के भी अनेक रूप होते हैं। इन रूपों में एक रूप है रूद्र! अनेक लोग प्रभु का चिंतन इस रूप में करते हैं क्योंकि रूद्र का भाव होता है रुलाने वाला, भयभीत करने वाला। बस इस रूप का चिंतन करने से उनका अभिप्राय होता है कि वह उसके भय से भयभीत होकर कभी बुरे कर्म न करें। जब वह उस के इस रूप का चिंतन करते हैं तो स्वयं को बुरे मार्ग से तो बचा लेते हैं किन्तु इस चिंतन से उन्हें आनंद नहीं मिलता। प्रतिक्षण भय के वातावरण में रहने से कभी आनंद मिला ही नहीं करता। जब मनुष्य प्रभु के न्यायकारी रूप का चिंता न करता है तो उस के पापों की निवृति संभव हो जाती है किन्तु केवालिस मार्ग से भी उसे आनंद अर्थात् शांतिमयी जीवन की प्राप्ति नहीं होती। हाँ रूद्र के साथ जब प्रभु के सोम रूप का भी चिंतन करते हैं तो हमें शक्ति और शांति का स्रोत प्राप्त होना संभव हो जाता है। इस प्रकार का उपदेश वेद के नेक प्रकरणों में मिलता है।

प्रात: काल उठकर जिन मन्त्रों के गायन का प्रभु ने वेद में हमें आदेश दिया है। उनमें से इस प्रथम मन्त्र की यह सूक्ति हमें उपदेश कर रही है कि :

हम प्रात: काल उठाकर दुष्टों को (बुरी वृतियों को) रुलाने वाले और शान्ति के स्रोत उस प्रभु को पुकारें। उस का छिनन मनन करें। यहां प्रभु के जिस उपदेश को मन्त्र द्वारा उपदेशित किया गया है वह है विषाद अथवा निराशा को दूर कर प्रसन्नता को प्राप्त करना। वेद में इस तथ्य पर अत्यधिक बल दिया गया है। इतना ही नहीं इस तथ्य का एक नहीं सैंकड़ों मन्त्रों में विधान किया गया है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

ऋषि बोधोत्सव मनाया

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 194वां जन्मदिवस 10 फरवरी 2018 दिन शनिवार एवं 12 फरवरी 2018 दिन मंगलवार ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्री पर्व) बड़े हर्षोल्लास से दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में मनाया गया। स्कूल भवन को रंग-बिरंगी लाईट लगाकर दीपमाला करके सजाया गया। स्कूल के बच्चों ने शोभायात्रा में शामिल होकर महर्षि का गुणगान किया। स्कूल में हवन यज्ञ के साथ-साथ ओ३म् ध्वज लहराया गया। अध्यापकों द्वारा बच्चों को स्वामी जी की जीवनी से अवगत कराया गया और बच्चों को उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई। वैदिक प्रश्नोतरी करवाई गई। इस अवसर पर कार्यकारिणी सभा के सदस्य उपस्थित हुए। प्रधान सन्तकुमार जी, मनीष मदान जी, श्री रमाकांत महाजन जी, श्री सतपाल नारंग जी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित हुए। प्रिंसीपल मैडम ने आए हुए सभी सदस्यों को स्वागत किया और सभी को महर्षि जी के जन्मदिवस और ऋषि बोधोत्सव की बधाई देते हुए कहा कि आर्य शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य उच्च शिक्षा देने के साथ-साथ बच्चों को वैदिक संस्कृति से जोड़ना है।

चुनाव समाचार

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक चुनाव 4 मार्च 2018 को सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री विजय सरीन जी सर्वसम्पति से पुन: प्रधान निर्वाचित हुए। अन्य अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य चुनने के लिए सर्व सम्मति से उनको अधिकार दिया गया। इस अधिकार का प्रयोग करते हुए उन्होंने पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों का चयन किया जो इस प्रकार है। प्रधान श्री विजय सरीन जी, उपप्रधान श्री राजेन्द्र बेदी, श्री वृज मोहन अरोड़ा, महामन्त्री श्री अनिल कुमार, मन्त्री श्री बृजेशपुरी, कोषाध्यक्ष श्री राजीव गुप्ता, सह कोषाध्यक्ष श्री संजीव गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष अजय मोंगा, अध्यक्ष वेद प्रचार श्री बाल कृष्ण शर्मा, अन्तरंग सदस्य श्री ओम प्रकाश गुप्ता, श्रीमती अनुपमा गुप्ता, लेखा निरीक्षक, श्री कृष्ण चन्द झांजी। **-अनिल कुमार महामन्त्री**

ऋषि बोधोत्सव पर्व मनाया गया

आर्य समाज माडल टाऊन अमृतसर में ऋषिबोधोत्सव महाशिवरात्रि का पर्व बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ आर्य समाज के प्रधान श्री देशबन्धु धीमान तथा मन्त्री श्री विजय ठुकराल के नेतृत्व में मनाया गया। मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य ने का कि आज मानव स्वार्थ प्रवृत्ति तथा पाश्चात्य सभ्यता के कारण भ्रमित हो चुका है। सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी विशोकायति जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने बुराईयों को दूर करने के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया। स्वामी सदानन्द जी ने आर्य समाज को एक क्रान्ति बताया तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को उस क्रान्ति का सूत्रधार बताया। उन्होंने सभी को स्वामी दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने कर प्रेरणा प्रदान की। डा. स्वराज ग्रोवर ने कहा कि महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश विश्व को महान देन है । वेद मनुष्य के प्राण हैं, समस्त कष्टों की औषधि है। प्रो. दरबारी लाल जी ने कहा कि स्वामी जी युग प्रवर्तक थे। उन्होंने शिवरात्रि पर्व से प्रेरणा लेकर संसार के लिए महान कार्य किया है। वे एक सच्चे समाज सुधारक थे। श्री देशबन्धु जी ने कहा कि आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। माता जगदीश रानी आर्या ने कहा कि आर्य समाज के मार्ग पर चलकर ही सबका कल्याण होगा। कु. शिवानी तथा जसवन्त जी ने अपने मधुर भजनों से सबका मन मोह लिया। डा. प्रभजोत कौर ने आर्य समाज के बताए मार्ग पर चलने को कहा। विभिन्न आर्य समाजों से श्री राकेश मेहरा, श्री इन्द्रजीत ठुकराल, श्री इन्द्रपाल, डॉ. प्रकाश चन्द, श्री बनारसी दास, श्री अरूण महाजन, श्री कोमल, श्री वेद मित्र, श्री धर्मपाल खन्ना, श्री रमेश दत्त, श्री विनोद शील, श्री यशपाल सैनी, श्री सुभाष महाजन, श्री धर्मवीर, श्री सुनील धवन, आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में शान्तिपाठ किया गया तथा सभी आर्यजनों ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। **-देशबन्धु धीमान प्रधान आर्य समाज**

साप्ताहिक आर्य मर्यादा, जालन्धर
रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20 RNI No. 26281/74

स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट में वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन

स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट में वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी विशेष रूप से पधारने पर उन्हें सम्मानित करते हुये प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य। जबकि चित्र दो में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आई छात्राओं को सम्मानित करते हुये सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी।

स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कॉलेज रायकोट में प्रिंसिपल श्रीमती सरला सग्गड़ जी एवं विभागाध्यक्ष श्रीमती अमनदीप कौर के सुयोग्य निर्देशन में एक दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता करवाई गई। इस एथलैटिक मीट में मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी विशेष रूप से उपस्थित हुए। कॉलेज की प्रबन्धकीय कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी, जनरल सैक्रेटरी श्री राजिन्द्र कौड़ा जी तथा अन्य पदाधिकारियों ने श्री भारद्वाज जी को पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका हार्दिक स्वागत किया। मुख्य अतिथि श्री प्रेम भारद्वाज जी ने गुब्बारे छोड़कर तथा ध्वजारोहण करके एथलीट मीट का शुभारम्भ किया तथा मार्च पास्ट की सलामी ली। श्री प्रेम भारद्वाज जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से कॉलेज के लिए 21000 हजार रूपये की धनराशि सहायता के तौर पर प्रदान करने की घोषणा की तथा छात्राओं को उत्साह के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर करवाए गए 800 मीटर रेस मुकाबले में कॉलेज की छात्रा कविता कुमारी ने प्रथम स्थान, किन्दरजीत कौर ने द्वितीय स्थान तथा भवनप्रीत कौर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 1500 मीटर रेस मुकाबले में कविता ने प्रथम, रीतु ने द्वितीय तथा खुशप्रीत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। जैवलिन थ्रो मुकाबले में लखविन्दर कौर ने पहला, अर्शदीप कौर ने दूसरा और हरप्रीत कौन ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। हाई जम्प मुकाबले में कविता ने प्रथम, सुखदीप कौर ने द्वितीय तथा रीतु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डिस्कस थ्रो मुकाबले में अर्शदीप कौर ने प्रथम, लखविन्दर कौर ने द्वितीय और बेअन्त कौर ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। शॉट पुट मुकाबले में हरप्रीत ने प्रथम, हरप्रीत कौर ने द्वितीय तथा अमनदीप ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। रिले रेस मुकाबले में हरदीप कौर एवं किन्दरजीत कौर ने प्रथम, गगनदीप और भवनप्रीत ने द्वितीय तथा अमनदीप और प्रभजोत कौर ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

पटेटो रेस मुकाबले में रीतु ने प्रथम, जसप्रीत ने द्वितीय तथा अमनदीप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लम्बी छलांग मुकाबले में कर्मजीत ने प्रथम, संदीप ने द्वितीय तथा किन्दरजीत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बोरी रेस मुकाबले में हरदीप ने पहला, रमनजोत ने दूसरा और कविता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। ड्रेस मुकाबले में गुरप्रीत कौर ने प्रथम, आलिशा ने द्वितीय तथा हरप्रीत चांदनी एवं सिमरन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस एथलैटिक की सर्वोत्तम एथलीट कुमारी कविता को चुना गया।

इस अवसर पर मैनेजमैंट के सदस्य श्रीमती हरजीत कौर खेला, श्री परविन्दर गोयल, स. जसवन्त सिंह जी, श्री के.के. धीर, डॉ. सूर्यकान्त, राम कुमार सोबती, श्री रविन्द्र नाथ जोशी, श्री मनिन्दर दास महन्त प्रधान आर्य समाज रायकोट, तथा स्टॉफ मैम्बर श्रीमती पूनम छाबड़ा, डॉ विनोद बाला, डॉ रविन्दर कौर, डॉ जसप्रीत गुलाटी, शिल्पा गोयल, अमनदीप कौर, संदीप कौर, परवीन कौर आदि समूह स्टॉफ उपस्थित थे।

राजेन्द्र कुमार कौड़ा जनरल सैक्रेटरी स्वामी गंगागिरी कॉलेज

श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा महामंत्री जी को सम्मानित किया गया

विगत दिनों आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बस्ती नौ जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री विशेष तौर पर पधारे। इस अवसर पर स्कूल में पुष्प गुच्छ देकर उनका सम्मान करते हुये श्री सुदेश कुमार जी, सभा कोषाध्यक्ष एवं स्कूल मैनेजर श्री सुधीर शर्मा जी, कार्यकारी प्रिंसीपल मीनू सालूजा, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब एवं श्री हरीश शर्मा जी।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौंक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।